भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग

राज्य सभा
तारांकित प्रश्न सं. 179
दिनांक 28.12.2018

कृषि पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

***179 श्री संजय सिंह:**

क्या कृषि और किसान कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के हाल ही में प्रकाशित प्रतिवेदन की जानकारी है जिसमें यह कहा गया है कि देश में एक-तिहाई जिले जलवायु परिवर्तन के चरम प्रभावों के प्रति अति संवेदनशील रहेंगे;

(ख) यदि हां, तो क्या सरकार की मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियों से निपटने और इससे होने वाली क्षति को कम करने के लिए त्वरित कार्यवाही करने संबंधी कोई कार्यनीति है, यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ग) सरकार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उक्त प्रतिवेदन में अनुमानित स्थिति के अनुसार किसानों की आय में औसतन पन्द्रह से लेकर अठारह प्रतिशत तक की कमी आने की स्थिति से किस प्रकार से निपटेगी?

उत्तर
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री
(श्री राधा मोहन सिंह)

(क) से (ग): सभा के पटल पर एक विवरण प्रस्तुत है।

*****

'कृषि पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव' से संबंधित राज्य सभा के दिनांक 28.12.2018 के तारांकित प्रश्न सं. 179 के भाग (क) से (ग) के संबंध में उल्लिखित विवरण

(क) जी, हां।

(ख) भारत सरकार, जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना का कार्यान्वयन कर रही है जिसमें एक मिशन के रूप में कृषि सम्मिलित है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) ने राष्ट्रीय जलवायु अनुकूल कृषि नवोन्मेषण (एनआईसीआरए) के माध्यम से ताप एवं सूखा सहनशील गेहूं, बाढ़ सहनशील चावल, सूखा सहनशील दलहन फसलों, जल भराव एवं उच्च तापमान सहनशील टमाटर आदि का विकास किया है। एनआईसीआरए परियोजना के एक भाग के रूप में, वर्ष 2011 में जलवायु परिर्वतन के प्रति कृषि की संबंधित संवेदनशीलता का आकलन किया गया था। सूची के आधार पर, 572 ग्रामीण जिलों को पांच श्रेणियों में विभक्त किया गया था जिसमें प्रत्येक श्रेणी में बराबर संख्या में जिले रखे गए और ऊपरी 20% जिलों (115) का श्रेणीकरण 'बहुत अधिक' संवेदनशील जिले तथा अगले 20% (115 जिले) का श्रेणीकरण, 'अधिक' संवेदनशील जिलों के रूप में किया गया है। इसके अतिरिक्त, चरम जलवायु संबंधी परिस्थितियों के दौरान कृषि-परामर्श उपलब्ध कराने के लिए भाकृअप ने 633 जिलों के लिए जिला कृषि संबंधी आकस्मिकता योजनाएं विकसित की है।

(ग) किसानों की अनुकूलन क्षमता में बढ़ोतरी करने तथा वर्तमान जलवायु संबंधी परिवर्तनशीलता का सामना करने के लिए उन्हें सक्षम बनाने के लिए, स्थान-विशिष्ट प्रौयोगिकियों के प्रदर्शन हेतु एनआईसीआरए का प्रौद्योगिकी प्रदर्शन घटक (टीडीसी), वर्ष 2011 में आरंभ किया गया था। प्रत्येक जिले से एक प्रतिनिधि गांव को लेकर देश के 151 जलवायु की दृष्टि से संवेदनशील जिलों में यह कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इसका उद्देश्य प्रदर्शनों तथा प्रशिक्षणों द्वारा नवीन प्रौद्योगिकियों के बारे में किसानों को जागरूक बनाना है ताकि किसान इन प्रौद्योगिकियों को अपना सकें जो उन्हें परिवर्तनशील जलवायु परिस्थितियों के भी अनुकूल बनाएगा।

******